Ajanta
Page No.
Date

इकाई - 2 दृश्य कला

* दृश्य कलाएँ : अवधारणात्मक समझ एवं शैक्षिक उपयोगिता

दृश्य कला पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह दृश्य प्रकृति का होता है, अर्थात इसे देखा जा सकता है। जैसे- फोटोग्राफी, ढपाई, चित्रकला, कोलाज निर्माण इत्यादि। ललित कला के एक सुदृश्य भाग के रूप में दृश्य कला को माना जाता है। ऐसी कला जिसमें सौंदर्य की अपेक्षा को ललित कला कहलाता है। साथ ही इसे हस्तकला के रूप में भी देखा जाता है। क्योंकि यह हाथ से बनाया जाता है।

विद्यार्थीयों के लिए यह कितना लाभदायक है इसके लिए आँकड़ों पर आधारित प्रमाण की जरूरत नही है। इस कला से बच्चों का विकास होता है। लेकिन इसे मापा नही जा सकता है। कलात्मक माध्यम से बच्चे अपने विचारों, भावों को सरलता से व्यक्त कर पाते है। उनमें अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है। इससे बच्चों के कार्य में नयापन आता है। उनमें सृजनात्मकता का विकास होता है। बच्चे इस तरह से खुद से कर के कुछ सीखते है, तो उन्हें ये बात बहुत दिनों तक स्मरण रहता है। इससे उनके स्मरण शक्ति का विकास होता है। इस तरह से दृश्य कला शिक्षा में बहुत ही उपयोगी है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* दृश्य कला संबंधी कला अनुभव

* दृश्य कलाओं के विविध प्रकार एंव संबंधित सामग्री से परिचय एंव विकास : यथा - चित्र बनाना, मुखौटा, मिरर इमेज, कागज एंव कबाड़ से सामग्री निर्माण

दृश्य कलाएँ दो प्रकार की होती है -

A) द्विआयामी - इस कला का प्रयोग सपाट धरातल, कागज, काड, जमीन आदि पर किया जाता है। जैसे -

i) आरेखन एंव चित्रांकन - कला में रेखांकन एंव चित्रांकन का स्थान महत्वपूर्ण है। रेखांकन में बालक अपनी मानसिक कल्पना शक्ति द्वारा विभिन्न प्रकार का रेखा खीचता है और विभिन्न चित्रों का निर्माण करता है। अपनी कल्पना, विचारों, भावों तथा अनुभूतियों को पेंसिल द्वारा बनाकर अभिव्यक्त करता है। इसमें विद्यार्थी विभिन्न प्रकार का रंग भी भरते है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

ii) छपाई कला – कला की अभिव्यक्ति को छपाई द्वारा निखारा जाता है। छपाई कला के द्वारा एक सतह पर बने चित्र को हुबहु दूसरे सतह पर छापा जाता है। जैसे – ब्लॉक छपाई, ठप्पा लगाना, हाथ छापना इत्यादि

iii) कोलाज बनाना – कला के विभिन्न रूपों द्वारा बालक अपनी कल्पना को व्यक्त करता है। कोलाज में बालक विभिन्न तरह के चित्रों को इकट्ठा कर एक जगह सजाते हैं। तथा उसकी सुंदरता में चार चाँद लगा देते हैं। प्राथमिक स्तर पर कागजी कोलाज बहुत उपयोगी और रुचिकर होता है।

B त्रिआयामी – यह क्रियाकलाप तीन आयामों (लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई) में निर्मित कलाकृतियों को सजाने में प्रयोग किया जाता है। जैसे –

i) मृतिका प्रतिरूपण – मृतिका प्रतिरूपण कला द्वारा बालक अपनी कल्पना तथा सृजनात्मकता के अनुसार मिट्टी को रूप प्रदान करता है। यदि बालक अधिक सृजनशील होता है तो वह मिट्टी में जान डाल देता है। मृतिका प्रतिरूपण के बाद उस आकृति को देखकर सामने वाला उसे बनाने वाले की कल्पना को समझ पाता है।

ii) मुखौटा निर्माण कला – इस कला द्वारा बालक किसी कागज या गुब्बारे को एक आकृति देता है। किसी प्लेन कागज को मुखौटे की आकृति देकर उसे थोड़ा सजाकर उसे मूर्त रूप बनाया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

विभिन्न मुखौटे द्वारा भिन्न-भिन्न सोच तथा चरित्र को दर्शाया जाता है।

(ii) प्रतिरूपण (मॉडल) बनाना – इसके द्वारा बालक की कल्पना तथा सृजनात्मकता की जाँच होती है। बालक विभिन्न पुरानी मूर्त वस्तुओं को इकट्ठा कर उससे कोई नया प्रतिरूप तैयार करते हैं। जिससे उनका सोच और कल्पना प्रस्तुत होता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner